Sub:- Philosophy
Class:- B.A, Part-II (Hons)
Paper:- IV

लॉक का जन्मजात प्रत्यय का खण्डन (अन्तिम भाग)

Refutation of Innate Idea of Locke (Final Part)

⟹ पिछले भाग में हमलोगों ने लॉक का जन्मजात प्रत्यय का खण्डन का आरम्भ कर चुके हैं अब हमलोग उसके आगे की चर्चा इस भाग में करेंगे।

संसार में कोई भी नैतिक नियम ऐसा नहीं जिसे सार्वभौम कहा जा सके या जिसका विरोधी कभी भी उचित या मान्य नहीं रहा हो। उदाहरण के लिए चोरी, हत्या, इत्यादि कभी भी नैतिक मान्यताओं के अनुकूल नहीं परन्तु Spartans इसे धर्म मानते हैं। इतना ही नहीं लॉक के अनुसार पढ़े-लिखे और सभ्य कहे जाने वाले लोगों के बीच भी डकैती, हत्या, बलात्कार इत्यादि को मात्र जीवन का एक अंग समझा जाता है जिसे दंड और दोष से मुक्त माना जाता है।

इसी प्रकार प्रतिज्ञा का पालन करना ~~निःसन्देह~~ निःसन्देह एक पवित्र नैतिक कर्तव्य है।

परन्तु यदि यह पूछा जाय कि इसे क्यों पवित्र कहा जाय तो हम पाते हैं कि इस प्रश्न का अलग-अलग लोग भिन्न-भिन्न उत्तर देते हैं। उदाहरण के लिए ईसाई धर्म में आस्था रखने वाले लोग जिन्हें ईश्वरीय दंड और पुरस्कार में विश्वास है, उनके अनुसार की गई प्रतिज्ञा का पालन करना इसलिए पवित्र है क्योंकि ईश्वर का यही आदेश है कि प्रतिज्ञा का पालन करना चाहिए। परन्तु इससे भिन्न एक Hobbist का उत्तर होगा कि इसका पालन इसलिए पवित्र है क्योंकि जनता यही चाहती है। पर इन दोनों से अलग एक ईश्वर भक्त का उत्तर होगा कि प्रतिज्ञा का पालन नहीं करना बेइमानी है, यह मानवीय गुणों एवं धार्मिक माँगों के प्रतिकूल है, इसलिए प्रतिज्ञा का पालन करना एक पवित्र नैतिक कर्तव्य है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि यदि जन्मजात प्रत्यय का अर्थ प्रत्ययों का निश्चित और सार्वभौम होना है जैसा कि बुद्धिवादियों की मान्यता है तो लॉक के अनुसार हम किसी भी प्रत्यय को जन्मजात नहीं कह सकते क्योंकि कोई भी प्रत्यय ऐसा नहीं जिसकी चेतना सभी व्यक्तियों में समान रूप से पाई जाये।

इस प्रकार स्थूल पर जन्मजात प्रत्यय के समर्थक एक आपत्ति कर सकते हैं कि बच्चों

पागलों एवं अशिक्षित लोगों में प्रत्यय जन्मजात तो होते हैं पर उन्हें उनकी चेतना नहीं रहती। वे इन्हें स्पष्ट रूप से जान नहीं पाते। परन्तु लॉक को यह और निराधार प्रतीत होती है। उन्होंने इस प्रकार की आपत्ति के अंत में कहा है कि यह विचार न तो तर्कपूर्ण है और न ही आत्मसंगत। उनके अनुसार, यह किस प्रकार सम्भव है कि व्यक्ति के मन में प्रत्यय हो पर उसे उसकी कोई चेतना न हो। यदि हम यह मानते हैं कि प्रत्यय मन में है तो इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि हमें उसकी चेतना भी है। अतः यह कहना पूर्णतः आत्मविरोधी है कि बच्चों अथवा अशिक्षित व्यक्तियों में प्रत्यय जन्मजात तो होते हैं लेकिन उन्हें उनकी चेतना नहीं होती।

लॉक ने यह सिद्ध कर लेने के बाद चूंकि प्रत्यय निश्चित और सार्वभौम नहीं कहे जा सकते और इसलिए उन्हें जन्मजात नहीं कहा जा सकता, अब यह सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि यदि कुछ प्रत्ययों को निश्चित और सार्वभौम मान भी लिया जाय तो इससे इस बात का प्रमाण नहीं माना जा सकता कि ये प्रत्यय जन्मजात होते हैं। लॉक ने कहा है कि कुछ वर्ष पूर्व तक सभी लोग यह मानते थे कि पृथ्वी ब्रह्मण्ड के केन्द्र में स्थित है और सूर्य

उसकी परिक्रमा करता है। परन्तु Copernicus की खोज के बाद अब सभी लोग इस बात में विश्वास करते हैं कि यथार्थ में पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है और सूर्य ब्रह्मांड के केन्द्र में स्थित है। इसी प्रकार व्यवहारिक जीवन की अनेक ऐसी अनुभूतियां हैं जो सर्वमान्य एवं निश्चित तो हैं फिर भी उनके प्रत्यय को जन्मजात नहीं माना जा सकता।

निःसन्देह लॉक ने व्यवहारिक जीवन के तथ्यों के आधार पर अत्यन्त ही तर्कपूर्ण ढंग से जन्मजात प्रत्ययों का खण्डन और बहिष्कार किया है, पर प्रश्न यह है कि क्या कोई भी प्रत्यय ऐसा नहीं जिसे जन्मजात कहा जा सके? लॉक कभी भी इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं कि प्रत्यय हमारे मन में निहित हों और हमें उसकी कोई भी चेतना न हो। पर यहाँ लॉक एक भूल कर जाते हैं। शायद वे यह समझते हैं कि मन सदा ही चेतन रहता है। पर उनका यह विचार दोषपूर्ण है क्योंकि आधुनिक मनोविज्ञान यह मानता है कि वस्तुतः हमारे मन का अधिकांश भाग अचेतन रहता है। लाइबनीज ने अचेतन मन की सत्यता को स्वीकार किया है और इसी आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह सम्भव है कि व्यक्ति के मन में प्रत्यय जन्मजात हों पर उसे उसकी चेतना न हो।

इस आक्षेप के उत्तर में लॉक ने बताया कि यदि अचेतन की सत्ता मान भी ली जाय तो भी जन्मजात प्रत्यय की यथार्थता सिद्ध नहीं होती। अचेतन मन मानवीय नियन्त्रण से परे होता है, वह एक प्रकार से अज्ञात है, अचेतन की चेतना ~~सम्भव~~ सम्भव नहीं। पर यदि अचेतन की चेतना सम्भव है तो फिर यह बात भी किसी आधार पर मानी जा सकती है कि अचेतन मन में प्रत्यय जन्मजात रूप में निहित है। अचेतन की यथार्थता स्वीकारना और उसके सम्बन्ध में कोई भी निर्णय व्यक्त करना अपने आप में आत्मविरोधी है।

अतः लॉक ने किसी भी दशा में जन्मजात प्रत्ययों की यथार्थता मानने से इनकार किया है। वे इसका खण्डन और पूर्ण बहिष्कार करते हैं।

Dr. Md. Arshad Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College
V. K. S. U, Ara.